चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी (एम.ए.)

कहानी – E.C. 1

उदय प्रकाश की कहानी तिरिछ का आलोचनात्मक विवरण

उदय प्रकाश वर्तमान समय में बहुचर्चित लेखक हैं। वे अपने समय, समाज और मानव जीवन की समस्याओं, संघर्षों एवं मूल्यों को स्वर दे रहे हैं। कहानी जगत में उदय प्रकाश का प्रवेश नौंवे दशक के पहले वर्ष में हुआ। इससे पहले अनेक कविताएँ लिख चुके थें।

उदय प्रकाश की 'तिरिछ' अत्यंत चर्चित कहानी है। सन् 1990 में प्रकाशित यह दुसरा कहानी संग्रह है। शिल्प का नया प्रयोग इस कहानी में दिखाई पड़ता है। इस प्रयोग के कारण ही हिन्दी में प्रथम जादुई यथार्थ वाद की चर्चा का जन्म हुआ। 'तिरिछ' शहरों में खत्म होती संवेदना को उभारने वाली एक मार्मिक कहानी है। मैं शैली में लिखी इस कहानी में 'पिताजी' तिरिछ से काटने से नहीं मरते, बल्कि शहरी जीवन की संवेदनहीनता और निर्ममता के कारण मरते हैं। क्योंकि वे एक बेहद संवेदनशील और आत्मसम्मान वाले व्यक्ति थें।

'तिरिछ' कहानी का प्रमुख पात्र 'पिता' इस देश के एक आम आदमी हैं, जो अभी प्रधानाचार्य से रिटायर हुए हैं। वर्तमान में पिता जी ग्राम प्रधान हैं। लेकिन विपन्नता ने घर के चारों तरफ से जकड़ लिया है। कभी–कभी तो विपन्नता के अभिशाप को थोड़ा कम करने के लिए घर के बर्तन भी

बेच दिए जाते हैं। निम्नमध्यवर्गीय यह पिता अपने मकान और परिवार को बचाने में लगा हुआ हैं। यह परिवार आर्थिक समस्याओं का शिकार है। मकान पर कर्जा है। पिता को मकान बचाने के लिए शहर कोर्ट में हाजीर होना है। शहर का यथार्थ बड़ा खतरनाक है। पिता कठिनाइयों, मुश्किलों, दुःस्वप्नों से भरसक दूर रहना चाहते हैं, पर यह मुमकिन नहीं।

इस कहानी में जो एकमात्र घर को खो देने का भय है, वह हमारे ग्रामीण भारत की सबसे क्रूर सच्चाइयों में से एक है। अपनी जगह से विस्थापित होने का भय और शहर में पिता को कोई अदालत का रास्ता नहीं बताता, प्यासे को पानी नहीं मिलता। संबंधित ग्रामीण को सिर्फ उसकी भाषा और भाव–भंगिमा तथा वेशभूषा के आधार पर संदेह की नजरों से देखा जाता है। इस पिता को शहर में दर–दर की ठोकरें खाकर अपमान और तिरस्कार के तिरछों के काटे से मरना पड़ता है।

इस कहानी में 'तिरिछ' एक मोटाफर है और लोकविश्वास से लेकर पुत्र के स्वप्नों में बहुत गहराई से व्याप्त है। कहानी में पिता को जिस तिरिछ ने काटा, उसे पिता ने तुरंत मार दिया और घर आ गये। अब आगे की कहानी में तिरिछ के कई रूप हैं जो एक–एक कर प्रकट होते हैं। दरअसल जानवर तिरिछ ने पिता को जो काटा तो उससे मौत शायद नहीं होती, लेकिन बाद में कई किस्म के तिरिछ उन्हें गाँव से शहर तक की यात्रा में काटते हैं, उन्होनें ही पिता की हत्या की। हम गाँव को चाहे जितना अंधविश्वासी मानें, लेकिन वहाँ जो देसज ज्ञान है, वह इंसान को

बचाने की आदिम कोशिशों में हमेशा लगा रहता है। इसलिए पिता गाँव की झाड़फूंक से नहीं मरे, जैसा कि पुत्र कहता है–"पोस्टमार्टम में पता चला था कि उनकी हड्डियों में कई जगह फ्रैक्चर था, दाई आँख पूरी तरह फूट चुकी थी, कॉलर बोन टूटा हुआ था। उनकी मृत्यु मानसिक सदमे और अधिक रक्तस्त्राव के कारण हुई थी। रिपोर्ट के अनुसार उनका आमाशय खाली था, पेट में कुछ नहीं था। इसका मतलब यही हुआ कि धतूरे के बीजों का काढ़ा उल्टियों द्वारा पहले ही निकल चुका था।"

लेखक ने 'तिरिछ' के माध्यम से समाज के भ्रष्ट सत्ताधारी लोगों का चित्रण किया है। इस कहानी में तात्कालिकता के साथ–साथ भविष्य के भयावह और विकराल रूप को भी दर्शाया गया है। इसमें पिता की मृत्यु का ब्यौरा लेखक ने दिया है, उससे शहरी लोगों की अमानवीयता का पता चलता है। यह कहानी न केवल अपने समय की तात्कालिकता की बोधग्यमता का दर्शन कराती है वरन् अपने समय के बहुत आगे के भयावह और विकराल होते जाते समय से भी हमारा परिचय कराती है। यह कहानी अपनी पूरी रचनात्मक शिद्धत के साथ पाठक के भीतर प्रवेश करके उसके मानसिक तंतुओं को झकझोर देती है।

'तिरिछ' कहानी में लेखक का उद्देश्य समकालीन समय के दुःस्वप्नों की ओर पाठक को इंगित कराना है। इन दुःस्वप्नों से भरे यथार्थ में मानवीय रिश्तों के लिए गुंजाइश लगातार धुंधली पड़ती जा रही है। नगर–महानगर के जीवन में संदेह, अविश्वास और छले जाने को यह

कहानी दर्शाती है। शहरा अब इतना असंवेदनशील बन गया है कि प्यास से मर रहा राहगीर उसे लुटेरा नजर आने लगता है।

यह कहानी भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था और उसकी लापरवाही को भी उजागर किया है। जब एक व्यक्ति भूखा–प्यासा शहर में, गंभीर हालत में घूमता रहता है लेकिन प्रशासन के लोगों द्वारा उसे देखकर अनदेखा कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि हमारे देश की व्यवस्था कितनी खराब है। कहानीकार उदयप्रकाश ने आज के उपभोक्तावादी संस्कृति के बिंब को हमारे सामने यथार्थ बनाकर चित्रित किया है और यह बताने का प्रयास किया है कि सामंतवादी युग 'तिरिछ' के समान है। जब तक व्यक्ति उसे छेड़े नहीं अर्थात् कोई उसके खिलाफ विरोध की आवाज न उठाए तब तक वह आम मनुष्य को काटता या उसके विरोध को कुचलता नहीं है। तिरिछ उस बाजारवाद का भी प्रतीक है, जिसका प्रभाव हमारे समाज को विकृत कर रहा है।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ० कंचन कुमारी
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : kanchanroycool@gmail.com